Downloaded from www.studiestoday.com

रैदास के पद

1. अब कैसे छुटै ..... करै रैदासा।।

भावार्थ :- कवि अपने इष्टदेव को स्मरण करते हुए उनसे भक्ति मांगते है। वे अपनी भक्ति के माध्यम से उन्हें पाना चाहते हैं। कवि कहते हैं कि हे प्रभु! अब तुम्हारे नाम की रट लग गई है, वह छूट नहीं सकती। अब तो मैं तुम्हारा परम भक्त हो गया हूँ। तुममें और मुझमें वहीं संबंध स्थापित हो गया है जैसे चंदन और पानी में होता है। चंदन के संपर्क में रहने से पानी में उसकी सुगंध फैल जाती है। उसी प्रकार मेरे अंग-अंग में तुम्हारी भक्ति की सुगंध समा गई है।

हे प्रभु! तुम बादल हो और मेरा मन मोर। जोर तुम्हारी भक्ति की गड़गड़ाहट सुनते ही नृत्य करने लगता है। जैसे चकोर चांद को एकटक निहारता है वैसे ही मैं तुम्हारी भक्ति में निरंतर लगा रहता हूं। हे प्रभु! तुम दीपक की तरह हो और मैं उस बत्ती की तरह हूं जो दिन-रात भक्ति की आस में अहम अस्तित्व जलाती है। हे प्रभु! तुम मोती के समान हो और मैं धागा। अर्थात् तुम मोती के समान उज्जवल, पवित्र और सुंदर हो मैं उसमें पिरोया हुआ धागा हूँ। तुम्हारा और मेरा सम्बंध सोने और सुहागे के समान है। जैसे सुहागे के सम्पर्क में आकर सोना और अधिक खरा हो जाता है। उसका मूल्य बढ़ जाता है। उसी प्रकार तुम्हारे सम्पर्क में आने से मैं पवित्र हो गया हूं। मेरी भक्ति भी आपके सम्पर्क में आकर निखर उठती है। हे प्रभु! तुम मेरे स्वामी हो, मैं तुम्हारा दास हूं। मैं रैदास, तुम्हारे चरणों में इसी प्रकार की दास्य भक्ति अर्पित करता हूं।

2. ऐसी लाल तुझ ..... ते सभै सरै।।

भावार्थ :- निम्न कुल के भक्तों को समभाव स्थान देने वाले प्रभु का गुणगान करते हुए कवि कहते है कि हे स्वामी! हे प्रभो! ऐसी कृपा तुम्हारे अलावा कौन कर सकता है। हे गरीब निवाज! हे स्वामी! तुम ही ऐसे दयालु स्वामी हो जिसने मुझ अछूत और नीच के माथे पर राजाओं जैसा छत्र रख दिया अर्थात् तुम्हीं ने मुझे राजाओं जैसा सम्मान प्रदान किया। जिसे संसार अछूत मानता है तब भी हे स्वामी! तुमने मुझ पर असीम कृपा की। मुझ पर द्रवित हो गए। हे गोविन्द! तुमने मुझ जैसे नीच प्राणी को इतना उच्च सम्मान प्रदान किया। ऐसा करते हुए तुम्हें किसी का भी भय नहीं। तुम्हारी ही कृपा से नामदेव, कबीर जैसे जुलाहे, त्रिलोचन जैसे सामान्य, सधना जैस कसाई और सैन जैसे नाई संसार से तर गए। उन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया। रैदास कहते है कि हे संतो! सुनो, हरि जी सब कुछ करने में समर्थ हैं। वे कुछ भी कर सकते हैं।

क. निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर दीजिए -

प्र.1 पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

उ. पहले पद में भगवान और भक्त की चंदन-पानी, धन-वन-मौर, चंद्र-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोना-सुहागा आदि चीजों से तुलना की गई है। कवि ने अपनी भक्ति के माध्यम से प्रभु के नाम की लगन में रम जाने की इच्छा व्यक्त की है।

प्र.2 पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे-पानी-समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छांटकर लिखिए।

उ. तुकांत शब्द

पानी - समानी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मेरा - चकोरा
बाती - राती
धागा - सुहागा
दासा - रैदासा
घन - वन

प्र.3 पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबंद्ध है। ऐसे शब्दों को छोटकर लिखिए

उदाहरण : दीपक बाती
....
....
....
....

उ. उदाहरण :- दीपक - बाती
मोती - धागा
स्वामी - दासा
चंद्र - चकोरा
चंदन - पानी

प्र.4 दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उ. दूसरे पद में 'गरीब निवाजु' ईश्वर को कहा गया है जिस व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा होती है वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। नीच से नीच व्यक्ति का भी उद्धार हो जाता है। ऐसे लोग जो स्पर्श दोष के कारण हाथ लगने पर अपने-आपको अपवित्र मानते है। ऐसे दीनों पर दया करने वाले प्रभु ही है जो दुखियों के दर्द से द्रवित हो जाते है।

प्र.5 दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ. इस पंक्ति का आशय है कि सांसारिक लोग नीच जाति में उत्पन्न होने वालों के प्रति स्पर्श दोष मानते हुए उन्हें अछूत मानते है, पर ईश्वर उन लोगों पर भी कृपा करते हैं। उनका उद्धार कर देते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में भक्त की भक्ति ही श्रेष्ठ है। उसका प्रेम ही सर्वोपरि है। इसलिए प्रभु को पतितपावन, भक्त-वत्सल, दीनानाथ कहा जाता है।

प्र.6 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

उ. रैदास ने अपने स्वामी को गरीब निवाजु, लाल, गोविन्द, गुसाई, हरि, लाल आदि नामों से पुकारा हैं, नाम भले ही अनेक हो परंतु दीनदयाल गरीबों का उद्धार करने वाले है। वे सभी पर अपना प्रेम लुटाते है।

प्र.7 निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए -
मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसईआ।

उ.

मोरा -	मोर	राती -	रात
चंद -	चांद	छत्रु -	छत्र
बाती -	बत्ती	धरै -	धारण
जोति -	ज्योति	छोति -	छुआछूत
बरै -	जले	तुहीं -	तुम ही
गुसईया -	गोसाई		

ख. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

प्र.1 जाकी अंग-अंग बास समानी

उ. इस पंक्ति का भाव यह है कि भक्त स्वयं गुणों से रहित है। वह पानी के समान रंग-गंध रहित है लेकिन ईश्वर रूपी चंदन की समीपता पाकर धन्य हो जाता है। वह गुणों की प्राप्ति

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कर लेता है। जैसे पानी में घिसकर चंदन का रंग निखरता है उसी प्रकार भक्तों की भक्ति से प्रभु का महत्व बढ़ जाता है भक्त और भगवान इतने समीप आ जाते है कि भक्त के अंग-अंग में ईश्वर की सुगंध समा गई है। भक्त का रोम-रोम भक्ति से प्रसन्न है।

प्र.2 जैसे चितवत चंद चकोरा

उ. भक्त हमेशा भवसागर से पार कराने वाले परमात्मा के प्रति स्वयं को अर्पित कर देना चाहता है। हर क्षण उसी के रूप-दर्शन करने की इच्छा करता है। जिस प्रकार चकोर दिन-रात चांद को निहारना चाहता है। उसी प्रकार रैदास भी प्रभु रूपी चांद को एकटक निहारना चाहता है इसलिए एक क्षण के लिए भी उसका ध्यान प्रभु भक्ति से नहीं हटता।

प्र.3 जाकी जोति बरै दिन राती

उ. जिसकी ज्योति दिन-रात जलती रहती है। अर्थात् कवि स्वयं को बत्ती और प्रभु को ऐसा दीपक मानते है, जिसकी ज्योति दिन-रात जलती रहती है, ऐसे कवि दिन-रात प्रभु की भक्ति में आलोकित रहना चाहते है। भक्त ईश्वर के तेज से आलोकित हो रहा है।

प्र.4 ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

उ. हे प्रभु! आपके अतिरिक्त भक्तों को इतना मान-सम्मान देने वाला कोई और नहीं है। अर्थात् समाज में नीची जाति में उत्पन्न होने क कारण आदर-सम्मान मिलना कठिन होता है परंतु ईश्वर के यहां जातिगत भेद-भाव नहीं होता। वह सबके सम्मान की लाज रखते हैं। प्रभु ही सबका कल्याण करते हैं। उनके अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं है जो गरीबों और दीनों की खोज-खबर रखता है। ईश्वर ही अछूतों को ऊँचे पद पर आसीन करते है।

प्र.5 नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उ. कवि ने ईश्वर को पतित पावन, भक्त वत्सल, दीनानाथ व उद्धारक कहा है। निम्न श्रेणी के लोगों को भी प्रभु ऊँचा कर देता है। वह अपने भक्तों पर दया करता है तथा उनका उद्धार कर देता है। उनका गोविन्द किसी से नहीं डरता। कवित ने प्रभु को नाम देकर भी उसके निराकर रूप की ही चर्चा की है। गरीबों के दुःख दर्द को समझने वाला वहीं ईश्वर हैं वहीं उन्हें पीड़ाओं से मुक्ति दिलाने वाला भी है।

Downloaded from www.studiestoday.com